माम्मोलीना

मारिया मोंटेसरी की कथा

लेखन: बारबरा ओ'कॉनर

चित्र: सारा काम्पिटैले

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

मामोलीना

मारिया मोंटेसरी की कथा

लेखन: बारबरा ओ'कॉनर

चित्र: सारा काम्पिटैले

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

मारगॉट आर. वॉल्टुक के प्राक्कथन के साथ

एसोसिएशन मोंटेसरी इन्टरनैशनल

मामोलीना

मरिया मोंटेसरी की कथा

युवा मारिया मोंटेसरी कभी शिक्षिका नहीं बनना चाहती थीं। मारिया को स्कूल उबाऊ लगता था और उन्होंने बचपन में पढ़ाई छोड़ अभिनेत्री बनने की सोची थी। पर सौभाग्य कि ऐसा उन्होंने नहीं किया।

इसके बदले मारिया स्कूल में टिकी रहीं और अपने पिता व समाज की उम्मीदों के विरुद्ध जा बाल चिकित्सक बनीं - इटली की पहली महिला डॉक्टर।

डॉ. मोंटेसरी की बच्चों में गहरी रुचि जल्द ही उन्हें उस पेशे की दिशा में ले गई जिसे वे कभी अपनाना नहीं चाहती थीं - शिक्षण। उनके विचारों ने शिक्षा के स्वरूप को ही बदल डाला, और आज तक उनकी विरासत दुनिया भर में उनके नाम से जुड़े स्कूलों में ज़िन्दा है।

बारबरा ओ'कॉनर का जीवन्त वर्णन आधुनिक शिक्षा की 'मामोलीना' के प्रेरणादायक व असाधारण जीवन को बखूबी पेश करता है।

माम्मोलीना

अनुक्रम

प्राक्कथन

एक मोंटेसरी स्कूल की छात्रा/छात्र के रूप में या शिक्षा रुचि होने के कारण आपके मन में यह सवाल उठ सकता है कि आखिर मारिया मोंटेसरी थीं कौन? मारिया मोंटेसरी ने अपनी ज़िन्दगी को सभी बच्चों की तरक्की के लिए समर्पित कर दिया था। यह किताब उनके बचपन, इटली की पहली महिला चिकित्सक बनने की इच्छा रखने वाली युवती और शिक्षा की वैश्विक हस्ती व शांति की पैरोकार के रूप में उनके तमाम संघर्षों को उभारती है। मारिया मोंटेसरी की खासियत थी उनकी स्वतंत्र सोच, कल्पनाशीलता, और जीवन्त मिजाज़, वे इस सबकी जीती-जागती मिसाल थीं।

मुझे मारिया मोंटेसरी के साथ करीब से काम करने का सौभाग्य लारेन, हॉलैंड में तब मिला जब वे अपनी उस विश्व दृष्टि को विकसित कर रही थीं, जिसे वे 'ब्रह्माण्डीय' (कॉस्मिक) शिक्षा कहती थीं। सार्विक (युनिवर्सल) बालक की अवधारणा में उनकी गहरी आस्था थी, वे मानती थीं - कि सीखना सभी बच्चों के लिए एक समग्र जीवन अनुभव होता है और हरेक देश व संस्कृति के बच्चे बुनियादी रूप से एक ही तरह से सीखते और विकसित होते हैं।

मारिया मोंटेसरी ने मेरे व अनेक दूसरे लोगों के जीवन को अपनी विनोदप्रियता, बुद्धिमत्ता व असीमित ऊर्जा से प्रभावित किया है। आशा करती हूँ कि उनकी कहानी आपको उनकी इस उम्मीद के प्रति प्रेरित करेगी कि लोगों व दुनिया में शांति के निर्माण के लिए हम एकजुट हो सकते हैं।

मारगॉट आर. वॉल्टुक

एसोसिएशन मोंटेसरी इन्टरनैशनल

संयुक्त राष्ट्र की प्रतिनिधि

पेज 09

1

स्कूली दिन

इटली रोम शहर की एक अंधेरी, ठसाठस भरी कक्षा में लड़कियों का एक समूह लम्बी कतारों में मौन बैठा सिलाई कर रहा था। उनके सिर एकाग्रता से झुके थे। वे बिलकुल सीधे बैठी थीं, उनके लम्बे स्कर्ट उनके पैरों को सलीके से ढ़के हुए थीं। इनमें एक लड़की थी मारिया मोंटेसरी।

मारिया को सिलाई करना बुरा नहीं लगता था। वह ज़ोर से बोल कर दोहराए जाने वाले पाठों जितना उबाऊ तो नहीं था। जब वह सिलाई करती थी तब कम-से-कम वह अधिक रोचक चीज़ों के बारे में सोच तो सकती थी। कभी वह यह कल्पना करने की कोशिश करती कि लड़कों का स्कूल भला कैसा होता होगा। 1870 के दशक में ज़्यादातर लोग यह सोचते थे कि लड़कों और लड़कियों का एक ही कक्षा में साथ बैठना सही नहीं है। क्या लड़के भी ऐसी ही सख्त बैंचों पर बैठते हैं ? क्या वे भी इन्हीं नीरस पाठों को दोहराते हैं ? क्या उनके शिक्षक भी कक्षा के अगले हिस्से में खड़े हो, वही शब्द बार-बार पढ़ कर सुनाते हैं ? पर मारिया को एक बात पक्की तरह पता थी। वे सिलाई-कढ़ाई तो कतई नहीं करते होंगे।

जब मारिया छोटी थीं तब वे अपने स्कूली कार्य के बारे में खास महत्वाकांक्षी नहीं थी। वह लावोरी दोन्नेश्ची (स्त्रियों के काम), जैसे सिलाई का काम, को मन लगा कर करती और उसके लिए पुरस्कार पा संतुष्ट हो जाती थी। हालांकि उसे सभी विषयों में अच्छे अंक मिला करते थे। अपनी ही उम्र की दूसरी लड़कियों की तरह नौ वर्षीय मारिया भी अभिनेत्री बनना चाहती थी। रोम में कई थियेटर (नाटक मंच) थे। वह जानती थी कि अगर वह अभिनेत्री नहीं बनेगी तो बड़ी होने पर करने के लिए उसके पास खास विकल्प नहीं होगा, सिवा शिक्षिका बनने के। पर शिक्षिकाएं कड़क चेहरे वाली ऊबी हुई औरतें थीं जिन्हें कड़क चेहरे वाली ऊबी हुई लड़कियों को पाठ पढ़ कर सुनाने के अलावा कोई काम न आता था। ना, शिक्षिका बनने का विचार ही नन्ही मारिया को नापसंद था।

खेल मैदान में मारिया अमूमन आगे बढ़ कर नेतृत्व करती थी। उसका व्यक्तितत्व इतना प्रभुत्त्वशाली था कि दूसरी लड़कियाँ सहज ही उसके हुकुम का पालन करती थीं। पर कभी-कभी वे यह सोचतीं कि मारिया बेहद रोबीली और अक्खड़ है। पर मारिया या तो उनकी राय पर गौर ही नहीं करती या उसे इसकी परवाह ही नहीं थी। वह एक खुश मिजाज़ और आत्मविश्वास से भरी बच्ची थी।

1870 में मारिया के पैदा होने के बाद से ही रेनिल्डे मोंटेसरी यह उम्मीद लगाए थीं कि उनकी बेटी वे सब काम कर सकेगी जो रेनिल्डे के बचपन में बढ़ती लड़कियों के लिए सही नहीं माने जाते थे।

पेज 11

रेनिल्डे एक होनहार, सुशिक्षित स्त्री थीं जो अपनी बेटी को पढ़ने, सवाल पूछने, और खूब मेहनत करने को उकसाती थीं। उनका मानना था कि अच्छी शिक्षा पाना लड़कियों के लिए भी बेहद ज़रूरी है। अपनी माँ की हौसला अफज़ाई के चलते मारिया को अपनी पढ़ाई-लिखाई में और मज़ा आने लगा।

जब मारिया ने गणित में खास रुचि दर्शाई तो रेनिल्डे बड़ी खुश हुईं। हो सकता है कि अंकों के साथ काम करने का यह हुनर मारिया को अपने पिता एलैस्साण्ड्रो से विरासत में मिला हो, जो एक एकाउन्टैन्ट थे। मारिया को गणित की किताब पढ़ने में उतना ही मज़ा आता था जितना गुड़ियाओं से खेलने में। एक बार तो वे नाटक देखने जाते समय गणित की एक किताब थियेटर ले गईं ताकि नाटक के दौरान उसे पढ़ सकें!

बारह वर्ष की होते-होते मारिया अपने भविष्य के बारे में और अधिक सोचने लगीं। जल्द ही वे प्राथमिक स्कूल जो पूरा करने वाली थीं। उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान इटली में लड़कियों की शिक्षा प्राथमिक शाला के बाद पूरी मान ली जाती थी। पर मारिया को अब यह अहसास होने लगा था कि उसे स्कूल छोड़ अभिनेत्री नहीं बनना है। बल्की वह आगे पढ़ना जारी रखना चाहती थी। उसे पता था कि यह असंभव नहीं है। कुछ लड़कियाँ सैकेण्ड्री स्कूल भी जाती हैं। पर उसके सामने एक भारी समस्या थी। उनमें से ज़्यादातर लड़कियाँ क्लासिकल स्कूल में साहित्य व भाषाओं का अध्ययन करती थीं।

मारिया की रुचि ग्रीक व लैटिन भाषाओं में नहीं थी। रुचि थी गणित में, जो केवल तकनीकी स्कूल में पढ़ाया जाता था। पर तकनीकी स्कूल में बहुत ही कम लड़कियाँ जाती थीं, पर इससे मारिया को फिक्र नहीं थी। उसने तय किया कि वह गणित ही पढ़ेगी। मारिया अपने फैसले से बड़ी खुश थी। पर उसके पिता को कोई खुशी न हुई। तकनीकी स्कूल लड़कों के लिए है, उन्होंने मारिया से कहा। और गणित! किसी लड़की को भला गणित पढ़ने की दरकार ही क्या है? यह विचार ही अशोभनीय है!

पर मारिया अपना हठ आसानी से कहाँ छोड़ने वाली थी। उसने पिता को मनाने-बुझाने की कोशिश की। तर्क करे। चिरौरी की। पर एलैस्साण्ड्रो ने एक न सुनी। मारिया का तो मानो दिल ही टूट गया। वे समझते क्यों नहीं? क्या यह स्वाभविक नहीं कि उनकी इकलौती बेटी की भी हिस्सेदारी उनके गणित प्रेम में हो। पर एलैस्साण्ड्रो के विचार पुराने खयालातों वाले थे। वे किसी भी बदलाव को आसानी से नहीं स्वीकारते थे। युवतियों को हाज़िर-जवाबी की, सौम्यता की ज़रूरत होती है, गणित की नहीं, वे सोचते थे। और अधिकांश इतालवी समाज भी उनसे सहमत था।

सौभाग्य से रेनिल्डे ने बेझिझक तकनीकी स्कूल में पढ़ने के मारिया के निर्णय का समर्थन किया। शायद उन्हें मारिया में वह साहसी खोजी बच्ची नज़र आई जो वे खुद हमेशा से बनना चाहती थीं। उनकी बिटिया विद्रोहिणी है - और यह बात रिनाल्डे को अच्छी लगी। अपनी ज़िद्दी पत्नी व बेटी के सामने एलैस्साण्ड्रो टिक न सके।

पेज 14

मारिया का दाखिला 1883 के पतझड़ में तकनीकी स्कूल में होना था, अपनी तेरहवीं सालगिरह के तुरंत बाद। वह गर्मियों का मौसम मारिया को सालों-साल लम्बा लगा। मारिया ने किताबें पढ़ते और सिलाई-कढ़ाई करते समय गुज़ारा। पर उसका अधिकतर समय स्कूल के बारे में सोचने में ही बीतता। कैसा होगा वह तकनीकी स्कूल ?

मारिया को यह समझने में ज़्यादा वक्त नहीं लगा कि लड़कों के साथ स्कूल जाना लड़कियों के साथ स्कूल जाने से अधिक रोचक नहीं था। उसे इतिहास और भूगोल के बारे में जानने-सीखने में मज़ा आता था और खुशनवीसी (कैलीग्राफी) व इतालवी साहित्य जैसे नए विषयों को सीखने को वह आतुर थी। पर कक्षाएं तो हमेशा पहले जैसी ही होती थीं। छात्र अपनी मेज़ों के सामने घंटों बैठे किसी किताब से नियम रटते और दोहराते। यहाँ तक कि उसका पसंदीदा विषय गणित भी मारिया को उबाऊ लगता। काश उसे सवाल पूछने या कोई प्रयोग करने की छूट होती, या कम से कम अगले पाठ की ओर ही बढ़ पाती, तो शायद सीखने में कुछ मज़ा आता। पर मारिया यह तय कर चुकी थी कि उसे स्कूली पढ़ाई हर हालत में पूरी करनी है। सो उसने पढ़ना बन्द करने के बारे में सोचा तक नहीं।

तकनीकी स्कूल में कुछ वर्ष बिताने के बाद मरिया ने इन्जीनियर बनने का फैसला किया। हालांकि उसकी कक्षा के अधिकतर अन्य छात्रों की योजना भी इन्जीनियर बनने की थी, पर मारिया अपने पिता को इस बारे में बताने से डरती रही। वह उनकी प्रतिक्रिया की कल्पना कर सकती थी। ‘‘पर इन्जीनियरिंग लड़कों के लिए है!’’ यही तो कहेंगे वे।

मारिया का कयास सही था। एलैस्साण्ड्रो अपनी बेटी के फैसले से सकते में आ गए, उलझन में फंस गए। आखिर उनकी बेटी दूसरी युवतियों की तरह शिक्षिका क्यों नहीं बन सकती?

पर 1890 की गर्मियों में तकनीकी स्कूल पूरा करने के पहले मारिया ने अपने भावी पेशे के बारे में अपना फैसला एक बार फिर बदला। वह इन्जीनियर नहीं बनेगी, उसने अपने पिता को कहा। पर इससे पहले कि एलैस्साण्ड्रो चैन की सांस लेते, उसने दूसरी घोषणा की। उसने पिता को बताया कि वह इन्जीनियर बनने के बदले एक डॉक्टर बनेगी।

2

शेरों को बस में करना

‘‘तौबा, तौबा!’’

‘‘किसी ने पहले कभी यह सुना तक नहीं होगा!’’

‘‘एक महिला डॉक्टर? असंभव!’’

मारिया को ये शब्द बारबार सुनने पड़े, दोस्तों के मुँह से, परिवार वालों से, और बेशक अपने पिता से। इटली में कोई भी स्त्री पढ़ने के लिए कभी मेडिकल कॉलेज गई नहीं थी। ज़ाहिर था कि एलैस्साण्ड्रो मोंटेसरी किसी भी औरत द्‌वारा ऐसी बेहूदी बात का पुरज़ोर विरोध करते। पर उनकी खुद की बेटी? वे उसे चिकित्सा शास्त्र पढ़ने से रोक तो नहीं पाएंगे, पर उससे कभी एकमत नहीं होने वाले थे।

पर रेनिल्डे ने एक बार फिर अपनी बेटी का पक्ष लिया। वे मारिया के साहसिक निर्णय से बेहद प्रसन्न थीं। अपने पति के गुस्से भरे विरोध से वे तनिक भी नहीं घबराईं। वे जानती थीं कि मारिया ज़रूर एक उम्दा चिकित्सक बनेगी।

मारिया ने अपने लक्ष्य पाने की तैयारी हमेशा की तरह पूरे आत्मविश्वास से की। पेशे के असामान्य चुनाव के लिए पुष्टि पाने की इच्छा से वे डॉ. गुइडो बाच्चैल्ली के पास गईं, जो रोम विश्वविद्यालय के चिकित्सा विभाग के प्रमुख थे। मारिया ने उन्हें बताया कि वे स्नातक-पूर्व डिग्री पाने के बाद चिकित्सा का अध्ययन करना चाहती हैं और उनसे सहयोग मांगा। डॉ. बाच्चैल्ली को किसी स्त्री का चिकित्सा अध्ययन करने का विचार ही डरावना लगा। उन्होंने मारिया से कहा कि उसकी योजना असंभव है और किसी भी तरह का सहयोग देने से साफ इन्कार कर दिया।

पर मारिया डिगी नहीं। वापस लौटने के पहले उसने बड़ी शाइस्तगी से उनसे हाथ मिलाया, समय देने के लिए शुक्रिया अदा की और दृढ़ता से घोषणा की, ‘‘मैं जानती हूँ कि मैं एक डॉक्टर बनूंगी।”

1890 में बीस वर्षीय मारिया ने रोम विश्वविद्यालय में विज्ञान व गणित में स्नातक-पूर्व अध्ययन शुरू किया। उन्हें सभी कक्षाओं में ऊँचे अंक मिले और वे 1892 में अपना डिप्लोमा पा सकीं। मेडिकल स्कूल में आवेदन के लिए वे तैयार थीं। सख्त विरोध के बावजूद मारिया तब तक जुटी रहीं, जब तक उन्हें दाखिला न मिल गया।

किसी को यह ठीक से नहीं मालूम कि आखिर उसने यह हासिल कैसे किया। मारिया समूचे इटली की पहली महिला थीं जिसने चिकित्सा शास्त्र का अध्ययन किया। उसे मालूम था कि जीवन की सबसे बड़ी चुनौती उसके सामने है। चार लम्बे साल उसके आगे थे। क्या वह यह सच में कर सकेगी? मारिया को भरोसा था कि वह कर सकेगी।

विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले अन्य छात्रों की ही तरह मारिया भी अपने माता-पिता के साथ घर में रहती रही। दिन का हरेक पल (और रात का ज़्यादातर भाग) मारिया ने अपनी पढ़ाई को समर्पित कर दिया। जब उसकी उम्र की अधिकतर युवतियाँ सिलाई-कढ़ाई, पियानो बजाने का अभ्यास करने और युवकों द्वारा जताए प्रेम को सुनने में बिता रही थीं, मारिया भौतिकशास्त्र, रसायनशास्त्र और वनस्पतिशास्त्र पढ़ने में जुटी थी। वह कभी कक्षाओं में गैर-हाज़िर नहीं होती। सर्दियों के मौसम में एक दिन भारी बर्फबारी के बावजूद मारिया अपनी लम्बी स्कर्ट पहने कक्षा में पहुँची। पहुँचते-पहुँचते वह पूरी तरह गीली हो चुकी थी और गलन भरी ठंड उसकी हड्डियों में बस गई थी। और तो और वह अकेली छात्रा थी जो उस दिन कक्षा के लिए पहुँची थी। जो प्रोफेसर भाषण देने आए थे वे उसके उपस्थित होने के संकल्प से इस कदर प्रभावित हुए कि उन्होंने अकेली मारिया के लिए भाषण दिया।

हालांकि मारिया ने जल्द ही विश्वविद्यालय में अपने प्रोफेसरों का सम्मान जीत लिया पर अपने सहपाठियों का सम्मान जीतना कहीं ज़्यादा मुश्किल था। एक भी दिन ऐसा न गुज़रता जब उसे अपने और अन्य छात्रों के बीच के उस एक अंतर की याद न दिलाई जाती: कि वह एक स्त्री थी।

बेशक वह डॉक्टर बनने के लिए पढ़ाई कर रही थी, पर उससे उम्मीद यही की जाती थी कि वह उन्नीसवीं शताब्दी के सामाजिक नियमों की पालना करे। मारिया को स्कूल भवन छोड़ने और वहाँ से घर तक वापस लाने के लिए मार्गरक्षक के रूप में पिता की ज़रूरत पड़ती थी, जो ज़ाहिर तौर पर उसकी शिक्षा के खिलाफ थे। यह इसलिए क्योंकि किसी भी भले घर की युवती का अकेले सड़क पर चलन उचित नहीं समझा जाता था। भवन में पहुँचने के बाद भी मारिया को कक्षा के बाहर तब तक इन्तज़ार करना पड़ता जब तक आखिरी छात्र कक्षा में प्रवेश कर अपनी जगह पर न बैठ जाए। क्योंकि गलियारों में पुरुषों के पास से गुज़रना स्त्रियों के लिए शर्मिन्दगी की बात मानी जाती थी।

कई बार उसके सहपाठी ऐसे बैठते कि जब तक मारिया कक्षा में आए कोई स्थान खाली न बचा हो। ऐसा होने पर मारिया को दो घंटों की कक्षा में कमरे के पिछवाड़े में खड़े रहना पड़ता। मारिया तब सहपाठियों की ठिठियाहट सुनती, जब वे उसके बारे में कोई मज़ाक साझा करते। मारिया की प्रतिक्रिया अमूमन धैर्य और विनोद की रहती, पर कभी-कभी वह उन्हें आँखे तरेर कर घूरती भी। एक बार जब उसके पीछे बैठा छात्र बार-बार उसकी कुर्सी को लतियाता रहा, मारिया ने उसे सख्ती से ऐसे घूरा कि उस छात्र ने बाद में अपने दोस्त से कहा “मैं ज़रूर अमर हूँ, नहीं तो उसकी पैनी नज़र मुझे उसी पल मार ही डालती।”

मारिया का एक ही लक्ष्य था - डॉक्टर बनना। वह पुरुषों से भरे एक स्कूल को अपनी राह में आड़े नहीं आने देने वाली थी।

पेज 20

इन तमाम बाधओं के बावजूद मारिया अधिकतर समय खुश रहती। पर कभी-कभार ऐसा समय भी आता जब वह खुद को पूरी तरह पस्त महसूस करती। घर में उसके पिता उससे खिंचे-खिंचे और उसके प्रति उदासीन रहते। स्कूल में उसके सहपाठी उससे दुराव रखते और छेड़खानी करते। इन बाधाओं के अलावा शरीरविज्ञान की कक्षाओं की अग्निपरीक्षा भी थी, जिसमें चिकित्सा विज्ञान के छात्रों को मानव शरीर की चीर-फाड़ करनी पड़ती थी। मारिया को मृत शरीर की चीर-फाड़ करना और आंतरिक अंगों को छूना नापसंद था। स्थिति को मानो और पेचीदा करने के लिए मारिया को यह चीर-फाड़ रात को करनी पड़ती - निपट अकेले। क्योंकि पुरुषों के साथ किसी स्त्री का यह सब करना उचित न था।

शरीरविज्ञान संस्थान में अपनी पहली रात मारिया कभी नहीं भूल सकी। कमरे से बाहर भागने से खुद को रोकने में मारिया को अपनी पूरी इच्छाशक्ति का इस्तेमाल करना पड़ा। कमरे की अल्मारियों में अपराधियों के अंग सजे थे, एक मर्तबान में अंतड़ियाँ, दूसरे में मष्तिक। उनकी खोपड़ियाँ कतार में धरी थीं और काली स्याही के अक्षरों में उन पर ''हत्यारा'', ''चोर'' जैसी इबारतें चस्पाँ थीं। एक बेसिन में हड्डियाँ धरी थीं, जिन पर गुलाबी माँस अब तक चिपका था। एक कोने में विशाल कंकाल रखा था। ''मैं उसे घूर कर देख रही थी,'' मारिया ने अपनी एक सहेली को लिखा, ''मुझे कंकाल हिलता लगा। मैंने आँखें फेरी और कक्ष में आगे-पीछे चलने लगी, क्योंकि मुझे इस सबसे घृणा हो रही थी।''

चीर-फाड़ कक्ष में रसायनों की दुर्गन्ध से मरिया का जी मिचलाता था। एक बार तो उसने एक व्यक्ति को पैसे तक दिए, ताकि वह उसके पास खड़ा हो सिगरेट पीता रहे। उसने खुद भी सिगरेट पीने की कोशिश की - ताकि शवों की दुर्गन्ध से वह खुद को बचा सके।

मारिया सोचने लगी कि मेडिकल स्कूल को, चुनने का उसका निर्णय शायद गलत था। उसके सामने इतनी बाधाएं थीं कि उसे कभी-कभी लगता कि क्या उसका यह संघर्ष सच में जायज़ है। ज़ाहिर है कि पढ़ाई छोड़ देना अधिक आसान होता। पर मारिया पीछे हटने वालों में नहीं थी। उसने अपनी शंकाओं को परे धकेला और नई ऊर्जा के साथ अध्ययन जारी रखा। ‘‘उन दिनों,’’ उसने सालों बाद अपनी एक सखी को बताया, ‘‘मुझे लगता था कि मानो मैं कुछ भी कर सकती हूँ।

मेडिकल स्कूल के अंतिम दो वर्षों में मारिया ने बाल चिकित्सा का अध्ययन किया। रोम के बच्चों के अस्पतालों में काम कर उसने व्यावहारिक अनुभव पाया। उसे अपने काम से प्यार था और वह जल्द ही बाल रोगों की विशेषज्ञ बनने लगी। उसकी खास रुचि साइकियेट्री या मनोचिकित्सा में थी, सो मारिया ने विश्वविद्यालय के मनोरोग क्लिनिक में शोध भी शुरू की।

1896 में विश्वविद्यालय में छह लम्बे वर्ष बिताने के बाद मारिया आखिरकार अपने अध्ययन की समाप्ति के पास थी। उन दिनों, चिकित्सा के सभी विद्यार्थियों की तरह, मारिया के लिए भी वरिष्ठ छात्रों की उपस्थिति में एक भाषण देना आवश्यक था।

पेज 23

नियत दिन वह मंच पर चढ़ी और पुरुषों से भरे सभा कक्ष पर नज़र दौड़ाई। वह जानती थी कि मौजूद लोगों में से कई आलोचना कर उसकी धज्जियाँ उड़ाने को बेताब हैं। उसे डर था कि वे शोरगुल करेंगे, उस पर तंज कसेंगे। पर जब मारिया ने अपना भाषण समाप्त किया वह तालियों की आवाज़ से चकित हो गई। उसके सहपाठी ''ब्रावा!'' (वाह!) और ''बेने'' (उम्दा!) चीखते उठ खड़े हुए थे।

नम आँखों से मारिया ने उस शख्स को देखा जो सबसे अलग नज़र आ रहा था। आखिरी कतार में उसके पिता खड़े थे। वे तालियाँ बजा रहे थे! मुस्कुरा रहे थे! उन्होंने आखिरकार मारिया को उसके फैसले को, स्वीकार लिया था। यह दिन मारिया को कभी नहीं भूलने वाला था। उन्होंने बाद में इस दिन को याद करते हुए कहा था, ''मुझे उस दिन ऐसा लगा मानो मैं शेर को पालतू बनाने वाली इन्सान हूँ।''

10 जुलाई 1896 को पच्चीस वर्ष की उम्र में मारिया को अपनी मेडिकल डिग्री मिली और डॉट्टोरेसा (महिला डॉक्टर) की उपाधि भी। उसने अपना लक्ष्य हासिल कर दिखाया था। वह इटली की पहली महिला चिकित्सक बन गई थी!

3

नई दिशा

मारिया अपने विश्वविद्यालय के जीवन को पीछे छोड़ चिकित्सा का असली अभ्यास शुरू करने को बेताब थीं। अपना डिप्लोमा पाने के चार महीने बाद ही युवा डॉट्टोरेसा मोंटेसरी के पास तीन-तीन काम थे। दो अस्पतालों में सहायिका के रूप में काम करने के अलावा, उन्होंने खुद अपना क्लिनिक भी खोल लिया था। मारिया को पढ़ा चुके प्रोफेसर उसके पास मरीज़ों को भेजने लगे, खास तौर से बच्चों को। उन्हें मालूम था कि मारिया की रुचि बाल चिकित्सा में है। जल्दी ही मारिया का नया क्लिनिक मरीज़ों से भरने लगा।

अक्सर मारिया को किसी बीमार बच्चे को देखने के लिए उसके दफ्तर से मरीज़ के घर जाने का बुलावा आता। कभी-कभी नन्हे मरीज़ को जाँचने और उसका इलाज करने के बाद मारिया उसके सोने के कमरे को सही करती, उसके तकियों को ठीक करती, उसके पीने के लिए गरमा-गरम सूप का एक प्याला तैयार करती।

पेज 25

मारिया की एक करीबी सहेली ने एक बार उसका वर्णन करते समय कहा कि वह ''नौकरानी, खानसामा, नर्स और चिकित्सक का मिलाजुला रूप है।''

मारिया अपने नए पेशे में खुश थी। उसे इस बात का कयास ही न था कि मेडिकल स्कूल से निकलने के साल भर बाद ही उसका काम उसे एक नई दिशा में बढ़ा ले जाएगा। पर ठीक यही हुआ।

अपने व्यस्त दैनिक कार्यक्रम के बावजूद मारिया रोम विश्वविद्यालय के मनोरोग क्लिनिक में अपनी शोध जारी रख सकीं। 1897 में वे सहायक चिकित्सक के रूप में क्लिनिक का हिस्सा बनीं। मारिया ने सोचा कि वे एक और काम कैसे निभा सकेंगी, पर उन्हें मनोरोग विज्ञान अपनी ओर खींचता था। मारिया ने किसी न किसी तरह से यह भी करने का समय और ऊर्जा तलाश ली।

इस नए पद की उनकी ज़िम्मेदारियों में एक था मानसिक रोगियों के आश्रम या आवासों में नियमित रूप से जाना। इन आश्रमों में वे मरीज़ों का अवलोकन करतीं और उन रोगियों की पहचान करतीं जो क्लिनिक में इलाज के लिए उपयुक्त थे। मारिया बच्चों के प्रति आकर्षित हुईं। इनमें कई बच्चे मानसिक रूप से विमंदित थे। कुछ दूसरे भावनात्मक रूप से अस्थिर थे या उन्हें आचरण संबंधी गंभीर समस्याएं थीं। इन बच्चों को आश्रमों में कैदियों की तरह खाली अंधेरे कमरों में रखा जाता था। उनके पास खेलने के लिए खिलौने तक नहीं थे। मतलब कि सोने और खाने के अलावा करने को उनके पास कुछ भी नहीं था।
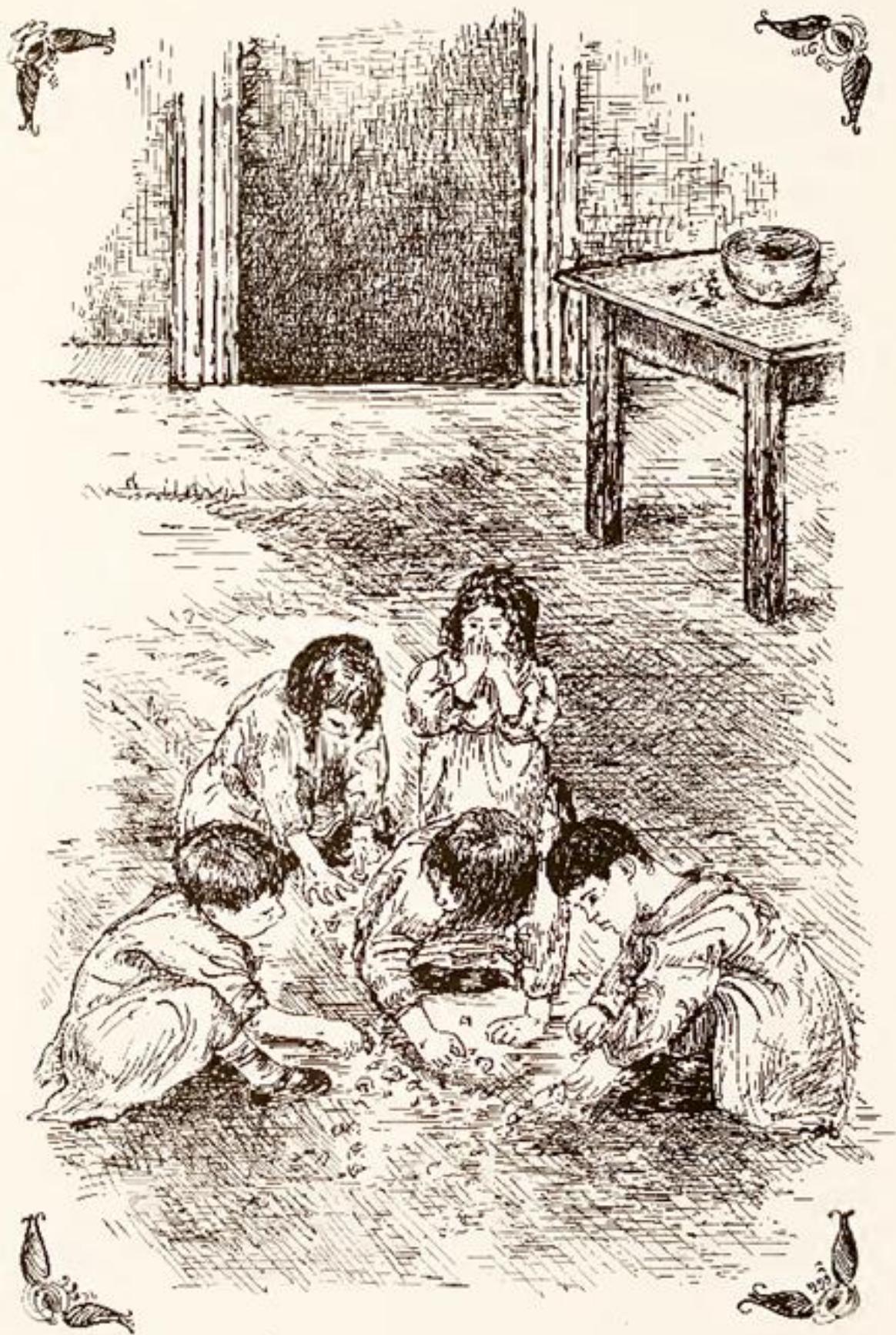
मारिया इन बच्चों को देख बेहद परेशान होतीं। वे हमेशा उनके बारे में सोचती रहतीं। उनकी मदद करने का कोई तरीका तो होगा। वे जानतीं थीं कि ऐसे बच्चों को आश्रम में ठूंस देना समाधान नहीं था।

इनमें से एक आश्रम कर दौरा करते समय मारिया को बताया गया कि बच्चे खाना खा चुकने के बाद फर्श पर घुटनों के बल रेंगते हैं; उन टुकड़ों की तलाश में जो खाते समय उनसे गिर गए हों। मारिया ने यह बात सुनी पर कोई टिप्पणी नहीं की। उन्होंने बच्चों को देखा। उस खाली कमरे की नंगी दीवारों पर नज़र घुमाई। अचानक उन्हें एक बात सूझी। हो सकता है कि बच्चे गिरे हुए टुकड़ों को इस लिए नहीं तलाश रहे हों कि वे भूखे हैं। संभव है कि इन बच्चों को सिर्फ देखने और छूने के लिए किसी चीज़ की ज़रूरत हो। आखिर गिरे हुए डबल-रोटी के टुकड़े ही तो उनके एकमात्र खिलौने थे।

मारिया ने जितना अधिक उन बच्चों का अध्ययन किया उतना ही ज़्यादा भरोसा उन्हें इस बात पर होने लगा कि इन बच्चों की मदद की जा सकती है। अगर उन्हें करने को कुछ गतिविधियाँ दी जाएं तो ? अगर उन्हें थामने-पकड़ने के लिए कुछ चीज़ें, देखने के लिए अलग-अलग रंग, महसूस करने के लिए विभिन्न आकार दिए जाएं तो वे कैसे प्रतिक्रिया करेंगे ?

मारिया को समस्याओं को सुलझाने में बड़ा मज़ा आता था, और उन्होंने ठान लिया कि वे आश्रम में डाल दिए गए इन बच्चों की समस्या को सुलझा कर ही रहेंगी। उन्होंने विमंदित और भावनात्मक रूप से अस्थिर बच्चों पर उपलब्ध सभी लिखित सामग्री पढ़ी। उनके उपचार के लिए जिन तरीकों का पहले इस्तमाल किया जाता था उनके बारे में पढ़ा। साथ ही वे लगातार बच्चों को देखती रहीं, अपने अवलोकन और विचारों को दर्ज करती रहीं।

आखिरकार मारिया जिस नतीजे पर पहुँची वह उनके जीवन की दिशा को हमेशा के लिए बदल देने वाला था। इन बच्चों को मनो-चिकित्सालयों में नहीं स्कूलों में होना चाहिए। ये बच्चे विशेष थे, उन्हें विशेष स्कूलों की ज़रूरत थी। मारिया ने तय किया कि वे छोटे बच्चों की शिक्षा के बारे में सब कुछ सीखेंगी। और तब आश्रम के इन बच्चों की मदद करने का उपाय ढूंढ़ निकालेंगी।

अपने दफ्तर और अस्पतालों में पूरे दिन मरीजों का इलाज करने बाद मारिया अध्ययन करने घर लौटतीं। उन्हें विश्वास था कि वे सही राह पर हैं। आखिरकार उन्होंने एक योजना बनाई - विशेष ज़रूरतों वाल बच्चों के लिए एक स्कूल की योजना।

मारिया के स्कूल की कक्षा स्पर्श करने और थामने के लिए वस्तुओं से भरी होगी। एक बगिया होगी जिसमें देखने और सूंघने के लिए रंग-बिरंगे फूल होंगे। बच्चे व्यायाम की कक्षा में भागे-दौड़ेंगे, गुलामाटियाँ खाएंगे। वे अक्षर भी सीखेंगे - पर किताबों में देख, उन्हें रट कर नहीं, बल्की हरेक अक्षर के आकार पर ऊंगली घुमा उन्हें स्पर्श कर। मारिया का मानना था कि बच्चों को पहले अपनी इन्द्रियों से सीखना चाहिए - देख कर, स्पर्श कर, सुन कर, सूंघ कर - और तब अपने दिमाग से।

पर मारिया जानती थीं कि कागज़ के पन्नों में दर्ज विचार नाकाफी होते हैं। अगर उन्हें अपने के स्कूल को हकीकत का जामा

पहनाना है तो उन्हें दूसरों को अपनी बात पर विश्वास भी दिलाना होगा। मारिया ने अगले दो वर्ष यही किया। उन्होंने चिकित्सकों से, शिक्षकों-शिक्षिकाओं से, सामाजिक कार्यकर्ताओं से खूब बातचीत की। अपने विचारों के बारे में सामान्य पत्रिकाओं व चिकित्सा की पत्रिकाओं में लेख लिखे। अपनी शोध पर भाषण दिए - पहले रोम में, और तब इटली भर में।

मारिया सुबह से देर रात तक काम करतीं। इतने व्यस्त कार्यक्रम की वजह से उनकी निजी सामाजिक ज़िन्दगी नदारद थी। उनके करीबी दोस्त उनके साथ काम करने वाले लोग ही थे। उन्हें डॉ. जुसेप्पे मॉन्टेसानो खास तौर से पसंद थे, जो मनोरोग क्लिनिक में सहायक चिकित्सक थे। दोनों युवा चिकित्सकों की रुचियों में समानता थी और दोनों जल्द ही करीबी दोस्त बन गए। मारिया, जुसेप्पे जैसा दोस्त पाकर खुश थीं। वे उनके सपनों को समझते और साझा भी करते थे। दोनों को जल्द ही एक-दूसरे से प्रेम हो गया।

मार्च 1898 में मारिया ने जुसेप्पे के पुत्र को जन्म दिया। पर जुसेप्पे व मारिया ने शादी नहीं की। शादी न करने का कारण आज तक कोई नहीं जानता।

मारिया ने अपने बेटे का नाम मारियो मोंटेसरी रखा। उसकी पैदाइश का राज़ जुसेप्पे व मारिया ने आजीवन गुप्त रखा। केवल उनके माता-पिता व उनके चंद करीबी दोस्त इस राज़ को जानते थे। उन दिनों शादी किए बिना बच्चा होना भारी कलंक माना जाता था।

अगर सच्चाई जाहिर हो जाती तो मारिया का पेशेवर जीवन ही बरबाद हो जाता। उसे वह सब बन्द करना पड़ता जिसके लिए उसने जी-जान लगा दी थी।

मारिया ने भारी मन से यह स्वीकार किया कि वे अपने बेटे को अपने साथ नहीं रख सकतीं। पर वे उसे पूरी तरह त्याग भी नहीं सकती थीं। सो मारियो को रोम के पास बसे ग्रामीण इलाके में एक दम्पति के पास भेज दिया गया। अगर मारिया उसे साथ नहीं रख सकती थीं तो कम-से-कम अपने से करीब तो रख ही सकती थीं। अपने बचपन में मारियो को अपनी असली माँ के बारे में कभी नहीं बताया गया। मारियो उन्हें केवल उस ''सुन्दर स्त्री'' की तरह जानता था जो उससे मिलने आया करती थी।

1898 की पतझड़ में भी मारिया ने विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों की शिक्षा पर भाषण देने और लेख लिखने का काम जारी रखा। जनवरी 1899 में इटली के शिक्षा मंत्री ने मारिया को रोम के शिक्षक प्रशिक्षण कॉलेज, कॉलेजियो रोमानो में भाषणों की एक श्रृंखला देने के लिए आमंत्रित किया। मारिया के लिए यह आमंत्रण बहेद मायने रखता था। बेशक वे इस बात से तो उत्तेजित थीं हीं कि वे रोम के भावी शिक्षकों से अपनी शोध पर चर्चा कर सकेंगी। पर एक और बात थी जिसने उन्हें इस आमंत्रण से इतना खुश कर दिया था। शिक्षा मंत्री डॉ. गुइडो बाच्चेल्ली थे, वही व्यक्ति जिन्होंने पूर्व में डॉक्टर बनने के मारिया के निर्णय को कतई समर्थन नहीं दिया था!

पेज 31

1900 की बसंत में मारिया को एक अच्छी खबर मिली। रोम में शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए एक नया स्कूल खुलने जा रहा था - जहाँ शिक्षकों को मानसिक व भावनात्मक समस्याओं का सामना कर रहे बच्चों के साथ काम करने के लिए प्रशिक्षित किया जाना था। शिक्षक उस शाला में पढ़ने वाले बाईस बच्चों के साथ काम करने वाले थे। मारिया को स्कूल चलाने वाले दो निदेशकों में से एक के पद का प्रस्ताव दिया गया। दूसरे निदेशक जुसेप्पे मॉन्टेसानो होने वाले थे। मारिया बेहद प्रसन्न थीं। अब वे अपने तमाम विचारों को बच्चों के साथ आज़मा सकती थीं। इससे सार्थक काम की वे कल्पना तक नहीं कर सकती थीं!

मरिया, जो तीस वर्ष की भी नहीं हुई थीं, अपनी सामान्य ऊर्जा और संकल्प के साथ इस नए काम में जुट गईं। उनकी स्वाभाविक जिज्ञासा और चुनौतियों के प्रति प्रेम उन्हें शिक्षण की ओर खींच लाया था - उस पेशे की ओर जिसे वे कभी अपनाना नहीं चाहती थीं!

पर मारिया कोई साधारण शिक्षिका नहीं थीं। वे बच्चों के साथ पूरे दिन रहतीं - उन्हें पढ़ातीं, उनका अवलोकन करतीं, उन पर प्रयोग करतीं। रात को घर लौट वे दिन भर के अपने अवलोकनों को दर्ज करतीं। तब वे शिक्षण सामग्री के चित्र और मॉडल बनातीं। जब उन्हें लगता कि कोई डिज़ाइन बिलकुल सही है, तो वे उस सामग्री को बनवातीं। कुछ ही समय में मारिया की कक्षा पकड़ने के लिए विभिन्न आकारों, पिरोने के लिए मनकों, बांधने के लिए फीतों आदि से भर गई। विभिन्न आकारों, रंगों व बुनावटों की अनेक वस्तुएं वहाँ थीं। ऐसी भी चीज़ें थीं जिन्हें स्पर्श किया, सूंघा, सुना जा सकता था।

पेज 33
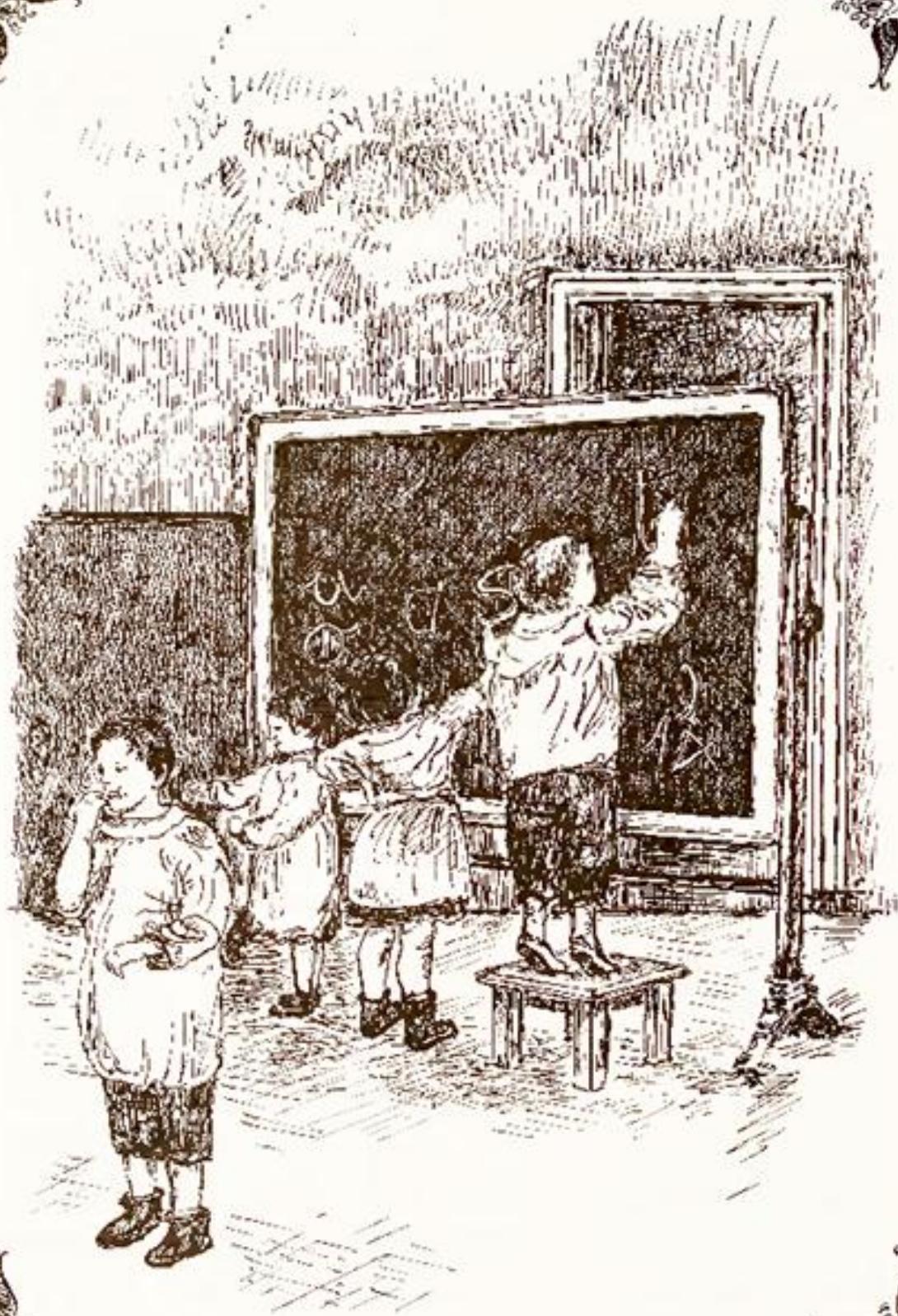
मारिया की सामग्रियों में एक थे लकड़ी के त्रि-आयामी अक्षर। उन्होंने स्वरों को लाल और व्यंजनों को नीले रंग में रंग दिया। तब बच्चों को अक्षर थमा वे उन्हें देखने बैठ गईं। मारिया तब मुग्ध रह गईं जब बच्चे उन अक्षरों को बार-बार, छूने-महसूस करने लगे।

तब एक दिन उनका दिल खुशी से मानो फट ही गया। बच्चे चॉक से श्यामपट्ट पर अक्षर लिखने लगे थे! जिन बच्चों से समाज ने हाथ ही धो लिया था, उन्होंने खुद को लिखना सिखा डाला था!

अब बच्चे अक्षरों की ध्वनियों को सीखने के लिए तैयार थे। दिनों-दिन तक मारिया उनके साथ काम करती रहीं, अक्षर की ओर संकेत करतीं और अक्षर की ध्वनि बतातीं, संकेत करतीं और ध्वनि बतातीं। यह ‘‘आई’’ है। यह ‘‘ओ’’ है। आखिरकार बच्चे अक्षरों को उनकी ध्वनियों से पहचानने लगे। ‘‘देखना पढ़ने में बदल जाता है; और स्पर्श करना लिखने में,’’ मारिया ने अपनी असाधारण पद्धति का वर्णन करते हुए बाद में लिखा। कुछ बच्चों ने तो इतनी प्रगति कर ली कि मारिया उन्हें सामान्य बच्चों के सार्वजनिक स्कूल में पठन व लेखन की परीक्षा दिलवाने ले गईं। वे परीक्षा में उत्तीर्ण हुए। मारिया जानती थीं कि उनकी विधि कारगर है, और उन्होंने यह सिद्ध कर दिखाया।

पर मारिया पूरी तरह संतुष्ट नहीं थीं। वे सोचती रहीं कि अगर यह विधि उन बच्चों के लिए अपनाई जाए जो विमंदित नहीं हैं, तो क्या होगा। अगर विमंदित बच्चे इतनी प्रगति कर सकते हैं तो सामान्य बच्चे क्या हासिल कर सकेंगे ? क्या वे उन बच्चों से अधिक तेज़ी से सीखेंगे जिन्हें परंपरागत तरीके से पढ़ना-लिखना सिखाया जाता है ?

सोचने के लिए मारिया के पास अब कुछ नया था।

4

असाधारण स्कूल

स्कूल में इतनी सफलता पाने के बावजूद मारिया ने 1901 में यह काम छोड़ दिया, जिसकी किसी ने उम्मीद नहीं की थी। बच्चों के साथ वे इतनी तरक्की कर चुकी थीं। फिर अब भला काम क्यों कर छोड़ा ? लोग सोचने लगे।

पर मारिया ने कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया। हो सकता है कि उन्होंने काम इसलिए छोड़ा हो क्योंकि जुसैप्पे के साथ उनका रिश्ता खत्म हो गया था और उसने किसी अन्य स्त्री से विवाह कर लिया।

बहरहाल, कारण जो भी रहा हो मारिया ने जुसैप्पे और स्कूल को पीछे छोड़ा और भविष्य की ओर देखने लगीं। अब यहाँ से कहाँ जाना है? उन्होंने स्कूल में किए गए अपने काम पर खूब सोच-विचार किया। उन्हें अचरज था कि बच्चे वास्तव में कितना सीख सके थे - और उन्होंने किस तेज़ी से सीखा था। पर वे यह भी सोचती रहीं कि अगर वे सामान्य बच्चों को सिखाने के लिए उसी विधि का इस्तेमाल करें तो क्या होगा।

एक बार फिर मारिया की जिज्ञासा उन्हें एक नई दिशा में ले गई। मेडिकल कॉलेज से निकलने के पाँच वर्षों में वे विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के शिक्षण की जानी-मानी विशेषज्ञ बन चुकी थीं। पर अब वे सामान्य बच्चों की शिक्षा के बारे में और जानना चाहती थीं। ''धीमे-धीमे'' उन्होंने बाद में कहा, ''मुझे विश्वास हो गया कि अगर सामान्य बच्चों के लिए भी इसी पद्धति का उपयोग किया जाए तो उनका व्यक्तित्व अद्भुत व आश्चर्यजनक रूप से विकसित या मुक्त हो सकेगा।''

तीस वर्षीय मारिया फिर से पढ़ने के लिए रोम विश्वविद्यालय लौटीं। उन्होंने उन विषयों को चुना जो उन्हें यह जानकारी दे सकें कि बच्चे दरअसल सीखते कैसे हैं - दर्शनशास्त्र, मनोविज्ञान, और नृशास्त्र (एंथ्रोपॉलजी) - साथ ही शिक्षण व साफ-सफाई के कुछ कोर्स भी उन्होंने किए। विशिष्ट शिक्षा के क्षेत्र में अन्य विशेषज्ञों के कार्य का उन्होंने अध्ययन किया। वे प्राथमिक स्कूलों में शिक्षकों व छात्रों का अवलोकन करने भी जाती रहीं। उन्हें यह देख भारी अचरज हुआ कि उनके स्कूली दिनों से आज तीस साल बाद भी पढ़ाने के तरीकों में कितना कम बदलाव आया था। बच्चे अब भी समवेत स्वरों में पाठों को दोहराते थे। वे सलीकेदार कतारों में सीधे ऐंठे हुए बैठते थे, मानो वे ''पिन से टांग दी गई तितलियाँ हों।'' उन्हें लगा मानों वे खुद को उनके बीच बैठी यह सब देख रही हों।

1904 के आते-आते मारिया के अध्ययन और अवलोकनों ने उन्हें यह भरोसा दिला दिया कि इटली में स्कूलों के बदलने का समय आ चुका है। उन्होंने इस दौरान जो कुछ जाना-सीखा वह सब उनके विचारों की पुष्टि करता था जो अर्से से उन्हें सताते रहे थे: बच्चों को सीखने पर मजबूर नहीं

करना चाहिए। वे तो वैसे ही सीखना चाहते हैं। मारिया का विश्वास था कि अगर सही सामग्री और सही वातावरण हो तो बच्चे खुद ही सीखना चुनेंगे।

हालांकि मारिया अपने दफ्तर और रोम के कई अस्पतालों में अब भी चिकित्सक के रूप में काम कर रही थीं उन्होंने इटली के स्कूलों को सुधारने के अभियान के लिए समय निकाला। उन्होंने अपनी शोध के बारे में पत्रिकाओं में लेख लिखे। रोम विश्वविद्यालय में शिक्षकों का एक कोर्स पढ़ाती रहीं। शिक्षक सम्मेलनों में भाषण दिए।

मारिया प्रभावशाली वक्ता थीं। वे कभी लिखित नोटस् का इस्तेमाल नहीं करतीं थीं, वे सधे स्वर में आत्मविश्वास के साथ अपनी बात रखती थीं। अपने बिंदु पर ज़ोर देने के लिए वे हाथ हिलातीं या मुट्ठी तान लेतीं। वे बेहद हाज़िर-जवाब थीं, और सबसे बड़ी बात यह थी कि वे लोगों को अपने पक्ष में कर लेतीं। उनके श्रोता उनके कहे पर विश्वास करने लगते।

मारिया को शिक्षा के विषय पर पढ़ने, लिखने और बोलने में मज़ा आता था। पर उनकी सबसे बड़ी चाह थी बच्चों के साथ काम करने की। क्योंकि वे जानती थीं कि उनके साथ काम करने पर ही वे यह जान पाएंगी कि वे सही हैं या नहीं।

मारिया को यह मौका 1906 में मिला। उस साल सम्पन्न बैंकरों का एक समूह मारिया के पास एक रोचक प्रस्ताव ले कर आया। उन्होंने बताया कि शहर के गरीब और बेघर लोगों के लिए उन्होंने एक भवन (चाल) की मरम्मत करवाई है, ताकि उन्हें सस्ते आवास उपलब्ध हो सकें। यह भवन रोम के सान लॉरेन्ज़ो इलाके में था।

यह इलाका अपनी गरीबी और कच्ची बस्तियों के लिए जाना जाता था। भवन के ज़्यादातर किराएदार गरीब कामकाजी लोग थे जिनके छोटे बच्चे थे। बच्चे स्कूल जाने की उम्र के नहीं थे सो माता-पिता उन्हें अकेला छोड़ काम पर निकल जाते थे। किसी वयस्क की निगहबानी के बिना बच्चे दिन भर भवन में दौड़ने-भागने और खेलने के लिए आज़ाद थे। वे ताज़ा-ताज़ा रंगी दीवारों को घसीटे मार कर बिगाड़ते और पूरे परिसर में कूड़ा-कचरा बिखेरते।

बच्चों को भवन को बरबाद करने से रोकने के लिए बैंकरों ने दिन में उनके रहने के लिए एक कमरा उपलब्ध करवाने का फैसला किया था। पर अब बैंकरों को किसी ऐसे इन्सान की तलाश थी जो बच्चों को व्यस्त रख सके ताकि वे शैतानी पर आमादा न हों। बैंकरों ने मारिया के काम के बारे में सुन रखा था और सोचा कि शायद वे ही वह इन्सान हैं जिसे वे तलाश रहे हैं।

मारिया तो ऐसी ही किसी चुनौती का इन्तज़ार कर रही थीं। पर उन्होंने काम स्वीकारने की एक शर्त रखी: बच्चों का कक्ष कैसे चलाया जाएगा इस पर मारिया को पूरा नियंत्रण चाहिए था। बैंकरों ने उनकी शर्त मंज़ूर कर ली।

मारिया ने अपनी छोटी-सी शाला का नाम ‘कासा दी बाम्बीनी’ रखा, जिसका मतलब होता है ‘बाल घर’। 6 जनवरी 1907 को कासा दी बाम्बीनी के द्वार खुले। मारिया को लगा माने उनके जीवन का कार्य अब जाकर शुरू हो रहा है। उन्होंने बाद में याद करते हुए कहा कि उन्हें यह

अहसास हो गया था कि उनका यह काम बेहद महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। स्कूल के औपचारिक शुभारंभ के दिन उन्होंने जो भाषण दिया, उसमें यह भविष्यवाणी की, कि किसी दिन दुनिया भर से लोग उनके बाल घर को देखने आएंगे। मारिया मोंटेसरी की तरह आत्मविश्वास से लबरेज़ कोई स्त्री ही एक खाली कक्ष और पचास उपद्रवी बच्चों पर नज़र डाल ऐसे आशाजनक भविष्य की कल्पना कर सकती थी।

मारिया अपने दिन का हरेक घंटा कासा दी बाम्बीनी में बिताना चाहती थीं। पर कासा की निदेशक होने के अलावा मारिया अब भी एक डॉक्टर, शिक्षिका, प्रवक्ता, और शोधकर्ता भी थीं। सो बैकरों की मंजूरी ले उन्होंने कासा के लिए एक शिक्षिका नियुक्त की ताकि उन्हें अवलोकन करने और प्रयोग करने का वक्त मिल सके। उन्होंने तुरंत उन शिक्षण सामग्रियों को भी मंगवाया जो उन्होंने बनाई थी। मारिया इन्हें 'सेंसरी' या 'संवेदी' सामग्रियाँ कहती थीं क्योंकि उनका विश्वास था कि वे बच्चों की इन्द्रियों को पैना करने में मददगार होंगी। इनमें कुछ सामग्रियाँ नई थीं, तो कुछ उन सामग्रियों का संशोधित रूप थीं जिनका उपयोग उन्होंने विमंदित व मनोरोगों से ग्रस्त बच्चों के लिए किया था।

कासा की शिक्षिका उस समय ज़रूर अचकचा गई होगी जब मारिया ने सामग्रियाँ सौंपने के साथ कहा कि वह बच्चों को उन सामग्रियों के साथ अकेला छोड़ दे। ''मैं बच्चों की प्रतिक्रिया का अध्ययन करना चाहती थी,'' मारिया ने बाद में स्पष्ट किया। ''मैंने उससे कहा कि वह कोई हस्तक्षेप न करे क्योंकि ऐसा करने पर मैं यह अवलोकन कर ही नहीं सकती थी कि बच्चे उनके साथ क्या करते हैं।''

मारिया को यह देख खुशी हुई कि बच्चों ने गुड़ियाओं और गाड़ियों की अनदेखी की और लकड़ी से बने बेलनाकार, घनाकार, छड़ी व अन्य आकारों की मारिया द्‌वारा बनाई गई सामग्रियों की ओर लपके। कई बार मारिया बच्चों को देखते घंटों गुज़ारतीं। वे हमेशा नई चीज़ों को आज़माने की सोचती रहतीं। पिछली रात बनाई किसी नई डिज़ाइन को लेकर वे इतनी उत्साहित होतीं कि स्कूल के समय का बेताबी से इन्तज़ार करतीं। उन्हें यह देखना अच्छा लगता कि बच्चे किस सामग्री को पसंद कर रहे हैं और उसका क्या उपयोग कर रहे हैं। वे तब मुग्ध हो जातीं जब बच्चे खुद-ब-खुद बेलनों को सही जगह पर रखना या घनों को सही तरीके से एक के ऊपर एक व्यवस्थित करना सीख लेते। उन्हें वृत्तों, चौकोरों, और त्रिकोणों को बोर्ड पर उनके सही खाँचों में रखना सिखाने के लिए किसी शिक्षक की दरकार न थी।

मारिया को यह देख अचरज हुआ कि तीन और चार साल के बच्चे किस तरह ध्यान केन्द्रित कर काम करते हैं, और अक्सर उसी काम को बार-बार दोहराते जाते हैं। उन्होंने गौर किया कि किसी खास उम्र में बच्चे कुछ कौशलों को अधिक आसानी से सीख लेते हैं। पर वह उम्र गुज़र जाने के बाद उन्हें उस कौशल को सीखने में कहीं अधिक समय लगता है। वे इन चरणों को सीखने के संवेदनशील चरण कहती थीं। जितना अधिक अवलोकन मारिया करतीं उतना ही अधिक उन्हें यह अहसास होता कि बच्चे को अपनी सामग्री चुनने देना कितना महत्वपूर्ण है। लगता यह था मानो अपने संवेदनशील चरण का बच्चों

को सहज-बोध हो। किताबों से भरा कोई पुस्तकालय या विश्वविद्यालय में पूरी ज़िन्दगी गुज़ारना भी मारिया को वह सब नहीं सिखा सकता था जो बच्चों के अवलोकन ने उन्हें सिखाया।

मारिया हर दिन स्कूल में हाज़िर नहीं हो सकती थीं, पर अपनी व्यस्त दिनचर्या में जब भी समय निकाल पातीं वे ज़रूर जातीं। कासा के बच्चों को उनका आना अच्छा लगता। जैसे ही दरवाज़े से घुसतीं बच्चे उनका अभिवादन करने दौड़े चले आते। वे इस गदराए बदन वाली स्त्री, जिसके चेहरे पर सदा सौम्य मुस्कान रहती थी, खूब पसंद करते थे। अब अपने तीसरे दशक के अंत की ओर बढ़ रही मारिया हमेशा गहरे रंग के सुन्दर कपड़े पहनतीं। उनके गहरे भूरे बाल सिर के ऊपर सलीके से जूड़े में बंधे होते। उनका इतना करीब बैठ बच्चों को काम करते देखना भी बच्चों को नहीं अखरता। जब मारिया उनसे बात करने या कोई सवाल पूछने आ पहुँचतीं तो बच्चों को खुशी होती। दरअसल वे बच्चों में महत्वपूर्ण होने का भाव जगाती थीं, इसलिए क्योंकि बच्चे जो भी कहते उसमें मारिया हमेशा रुचि लेती थीं।

सप्ताह गुज़रते गए। मारिया ने कासा दी बैम्बीनी में बदलाव जारी रखे। उन्होंने बच्चों के आकार के हिसाब से मेज़-कुर्सियाँ बनवाईं, जो इतनी हल्की-फुल्की थीं कि बच्चे खुद उन्हें हटा-उठा सकते थे। उन्होंने छोटे सिंक लगवाए ताकि बच्चे खुद हाथ-मुँह धो सकें। उन्होंने तालाबन्द अल्मारियाँ हटवा दीं और उनकी जगह बच्चों के कद के अनुरूप खुले आले लगवाए, ताकि बच्चे सामग्रियों व किताबों तक खुद पहुँच सकें।
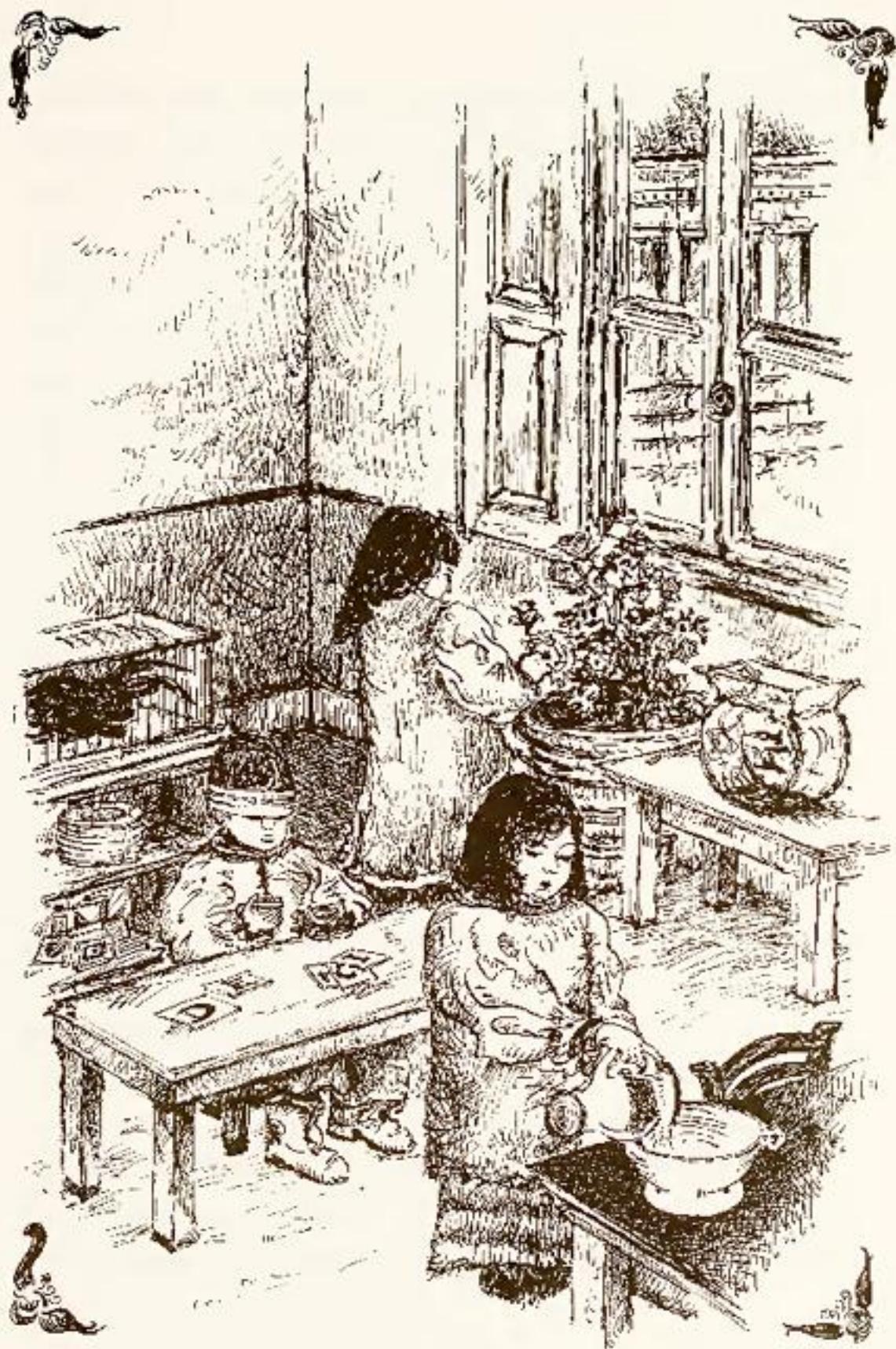
कासा दी बाम्बीनी की हरेक चीज़ उसे साधारण स्कूलों से अलग करती थी। धूपदार खिड़कियों की दहलीज़ों पर पौधे व फूलों के गमले सजे थे। मेज़ों पर खरगोश के पिंजड़े या मछली के कटोरे होते। बच्चे आज़ादी से कमरे में घूमते और जिस सामग्री में रुचि हो उसे चुनते। जब तक मन चाहता उतनी देर वे उस सामग्री के साथ काम करते और तब उसे यथास्थान धर देते। धूपदार दिन वे पिछवाड़े के नन्हे से बगीचे में बीज बोते, या खरपतवार हटाते। सबसे अच्छी बात यह थी कि बच्चे सीख रहे थे और साथ ही सीखने का मज़ा भी ले रहे थे।

सबसे छोटे से सबसे बड़े बच्चे तक सबको कुछ काम करने पड़ते। उन्हें पौधों और पशुओं की देखभाल करना, अपना भोजन तैयार करना और परोसना, कक्षाओं की साफ-सफाई करना सिखाया गया। मारिया इन घरेलू व्यवस्था के कामों को ''व्यावहारिक जीवन के अभ्यास'' कहती थीं। उनका मानना था कि बच्चों को शुरू से ही खुद के लिए काम करना सिखाया जाना चाहिए। वे अक्सर कहती थीं कि ''कोई भी तब तक वास्तव में आज़ाद नहीं हो सकता जब तक वह आत्मनिर्भर न हो।'' मारिया मोंटेसरी से बेहतर आत्मनिर्भरता का आदर्श भला कौन हो सकता था!

कभी-कभी बच्चों को देखते हुए मारिया सोचतीं कि कासा की कक्षा उस नीरस उबाऊ कक्षा से कितनी भिन्न है, जहाँ बचपन में वे खुद पूरे दिन बैठेने को मजबूर हुई थीं। ये बच्चे पिंजड़ों में कैद तोतों की मानिंद चतुर्भुज व त्रिकोण के नियम नहीं दोहराते थे। वे उन आकारों को हाथों में थाम उनकी भुजाओं गिन, उनके कोणों को महसूस कर सकते थे।

जिस तरह से स्कूल विकसित हो रहा था उससे मारिया खुश थीं। उन्होंने बच्चों को बेलगाम भागने-दौड़ने से रोकने से कहीं ज़्यादा हासिल किया था। भवन के मालिक भी प्रसन्न थे। उन्होंने मारिया से एक और रिहायशी भवन में स्कूल खोलने का आग्रह किया। 7 अप्रेल 1907 के दिन, पहले स्कूल खुलने के तीन माह बाद ही, दूसरा कासा दी बाम्बीनी सान लॉरेन्ज़ो में खुल गया।

उस पतझड़ मारिया ने एक और प्रयोग करने का फैसला किया। उन दिनों बच्चों को छह साल की उम्र के पहले पढ़ना या लिखना नहीं सिखाया जाता था। अधिकतर लोग मानते थे कि शाला-पूर्व आयु के बच्चे इन कौशलों को सीखने के लिए बहुत छोटे हैं। पर मारिया इस बात से इत्तेफाक नहीं रखती थीं। उन्होंने पहले भी आश्रम के बच्चों को लिखना सिखाने के लिए खास विधि का इस्तेमाल किया था। संभव था कि इन शाला-पूर्व आयु के ये नन्हे भी उस जैसी विधि से सीख सकते हों।

दोपहर ढ़ले जब सब बच्चे घर जा चुके होते मारिया और उनकी सहायिका एक खाली कक्षा में साथ बैठतीं। वे अपनी लम्बी स्कर्टों में छोटी-छोटी कुर्सियों पर बैठ गत्ते और रेगमाल से अक्षरों के आकार काट उन्हें आपस में चिपकातीं।

मारिया ने इन अक्षरों को गत्ते के एक खाली डब्बे में रखा और डब्बे को एक कक्षा के आले पर रख दिया। बच्चों को उनके बनाए ये नए ‘‘खिलौने’’ बहुत ही पसंद आए। वे बार-बार, लगातार अक्षरों को उठाते, उन पर उंगली फेरते, उन्हें छूते और उन्हें छाँटते। इसके बाद बच्चों ने हरेक अक्षर की ध्वनि निकालनी सीखी।

दिसंबर महीने के एक असामान्य रूप से गर्म दिन में, मारिया बच्चों के साथ छत पर बैठी थीं। उनके पास एक पाँच वर्षीय लड़का बैठा था। लगता था उसके पास करने को कुछ नहीं है। मारिया ने उसे चॉक का एक टुकड़ा दिया। ‘‘मेरे लिए इस चिमनी का चित्र बनाओ,’’ मारिया ने भवन की चिमनी की ओर इशारा कर लड़के से कहा।

नन्हा बालक मुस्कुराया, वह यह दिखाने को आतुर था कि वह कितनी अच्छी चित्रकारी कर सकता था। उसने कुछ चित्र बनाए, तब उत्तेजना से भर मारिया की देखा। ‘‘मुझे लिखना भी आता है!’’ उसने उत्साह से कहा और फर्श पर शब्द लिखने लगा। जी हाँ, वह लिख रहा था, केवल अक्षर नहीं, बल्की पूरे शब्द - ‘‘मानो’’ (हाथ), ‘‘कामिनो’’ (चिमनी), तैत्तो (छत)! जल्दी ही दूसरे बच्चे भी आसपास इकट्ठे हो गए। ‘‘मुझे चॉक दो, मैं भी लिख सकती हूँ,’’ एक ने कहा।

fil
camino
mano

जैसे-जैसे और बच्चे इकट्ठा हुए, उत्तेजना बढ़ने लगी। जल्द ही बच्चे हर ओर लिख रहे थे - फर्श पर, खिड़कियों के पल्लों पर, दरवाज़ों पर। मारिया ने उस दिन का वर्णन ''लेखन का विस्फोट'' कह कर किया। उस दिन से इस अभिव्यक्ति का उपयोग वे आगे भी करती रहीं।

उस रात मारिया ने अपने गत्ते और कैंची को फिर से निकाला। इस बार उन्होंने छोटी पर्चियाँ बनाईं: ''बम्बोला'' (गुड़िया), ''पाल्ला'' (गेंद), ''सेडिया'' (कुर्सी)। अगले दिन कासा में हरेक वस्तु पर उसका नाम चस्पाँ था। बच्चे अक्षरों की ध्वनियाँ जान ही चुके थे। उन ध्वनियों को जोड़ उन्होंने पूरे शब्द का उच्चारण बूझ लिया और लिखित शब्द को वस्तु से जोड़ सके। बच्चे अपनी नई खोज से इतने उत्तेजित हुए कि कमरे में भाग-दौड़ कर सभी पर्चियों को पढ़ने की कोशिश करने लगे।

एक दिन मारिया ने एक खेल बनाया। बच्चों को एक टोकरी से एक-एक कार्ड उठाना था। अगर वे उस पर लिखे खिलौने का नाम पढ़ लेते तो वे उस खिलौने से जितनी देर चाहते खेल सकते थे। पर बच्चों को खिलौनों से खेलना ही नहीं था। वे तो बस कार्ड पढ़ना चाहते थे!

उस दिन मारिया ने जो संतोष का अनुभव किया वह उसे कभी नहीं भूलीं। ''जब मैं उत्सुक बच्चों के बीच ध्यान मग्न खड़ी थी,'' उन्होंने बाद में याद करते हुए कहा, ''इस बात ने मुझे अचरज से भर दिया कि उन्हें ज्ञान से प्यार था, उस बेवकूफी भरे खेल से नहीं।''

पेज 49

बस्तियों में रहने वाले इन चार व पाँच साल के बच्चों ने पढ़ना-लिखना सीख लिया था। अगर मारिया इसके बाद कुछ भी न करतीं, तो भी दुनिया उन्हें इस एक ही उपलब्धि के लिए याद रखती। पर मारिया मोंटेसरी ने तो अब शुरुआत ही की थी।

पेज 50

5

माम्मोलीना

सान लॉरेन्जो में हो रहे इस असाधारण प्रयोग की खबर फैलने लगी। अखबारों में रपटें छपीं कि मारिया के स्कूलों में “करिश्मे” हो रहे हैं। पहले कासा को खुले साल भर से भी कम गुज़रा होगा कि, पत्रकार, शिक्षक, सामाजिक कार्यकर्ता और डॉक्टर खुद अपनी आँखों से यह देखने आने लगे कि आखिर इस बतंगड़ का कारण क्या है।

मारिया ने बिना बुलाए चले आने वाले इन मेहमानों का अपने स्कूलों में स्वागत किया। अपने काम के बारे में उन्हें बताना मारिया को अच्छा लगता था। वे इस बात से कतई परेशान नहीं होती थीं कि लोग उनके कहे पर शक करते थे। उन्हें मालूम था कि

पेज 51

उन्हें बच्चों को देखने की ज़रूरत भर थी। आने वाले मेहमान शंका से सिर हिलाते सान लॉरेन्जो में आते, पर जाते वक्त उनके सिर सहमति में हिलते दिखाई देते। डॉ. मोंटेसरी बेशक विलक्षण चीज़ें कर रही थीं। एक दिन स्कूल में आया हुआ एक पुरुष एक छोटे लड़के को श्यामपट्ट पर कुछ लिखते देख रहा था। इतने नन्हे से बच्चे के कौशल को देख वह दंग रह गया। उसने लड़के से पूछा ''तुम्हें लिखना किसने सिखाया?''

लड़के ने अपने काम से नज़र उठा व्यक्ति को उलझन के भाव से देखा। ''मुझे किसने सिखाया ?'' लड़के ने जवाब में कहा ''मुझे किसी ने नहीं सिखाया। बस मैं सीख गया।''

मारिया खुश हो गईं। ''मोंटेसरी विधि में बच्चे ही असली शिक्षक होते हैं,'' वे कई बार लोगों को कह चुकी थीं। उनके कहे की पुष्टि में यह नन्हा जो सबूत पेश कर रहा था उससे अधिक की मारिया को ज़रूरत न थी।

कई शिक्षिकाएं जो कासा में आतीं खुद को अक्सर वापस लौटता पातीं। मारिया के काम में उनकी दिलचस्पी जगती और वे नए विचारों से भर वापस लौटतीं। पर महज पेशेवर जिज्ञासा उनके वापस लौटने का कारण नहीं था। उन्हें मारिया पसंद आती थी। चतुर और रोचक होने के साथ मारिया सहृदय, धैर्यवान और मातृवत थीं। वे उतनी ही सहजता से उन्हें पास्ता की एक तश्तरी या चाय के प्याले का आमंत्रण

दे उनकी निजी समस्याओं के बारे में बात करतीं जितनी कक्षा में शिक्षिका की भूमिका पर जीवन्त चर्चा।

मारिया ने अपने जीवन काल में कई उपलब्धियाँ हासिल कीं, पर स्थाई मित्रताओं के लिए उन्हें कभी वक्त न मिल सका। अब, अड़तीस बरस की उम्र में वे लगातार आने वाली इन महिलाओं के साथ का स्वागत करतीं, उनकी विधि सीखने की उनकी आतुरता मारिया को संतोष से भर देती। मारिया उनकी शिक्षिका, सलाहकार, मित्र और माँ बन गई थीं। वे उन्हें स्नेह से ''माम्मोलीना'' पुकारतीं, इतालवी भाषा में इसका मतलब ''प्यारी माँ'' होता है।

इन महिलाओं में एक आन्ना माक्केरोनी थीं। आन्ना रोम विश्वविद्यालय में मारिया का भाषण सुन चुकी थीं। उस समय वे यह तय नहीं कर पा रही थीं कि उन्हें शिक्षिका बनना है या नहीं, पर वे मारिया से प्रेरित हुईं। अब वे अक्सर मारिया के स्कूल आया करती थीं। उन्हें मारिया में केवल एक अद्भुत शिक्षिका ही नहीं बल्की एक सहृदय सौम्य महिला भी नज़र आती थी। अन्ना धीरे-धीरे स्कूल की कई ज़िम्मेदारियाँ उठाने लगीं और अंततः मारिया की सहायिका बनीं। मारिया को आन्ना में अपनी टक्कर की ऊर्जावान और परिश्रमी युवती मिली। हर दिन आखिरी बच्चे के घर चले जाने के बाद दोनों देर तक काम करती रहतीं। तब रात के लिए ताले जड़ वे दोनों मारिया के घर की ओर निकलतीं, जहाँ

मारिया अपने माता-पिता के साथ रहती थीं। वहाँ गर्म अलाव के पास बैठ वे शिक्षण सामग्री बनातीं, शिक्षा, या महत्वपूर्ण सामाजिक मसलों पर बातचीत करतीं। मारिया की माँ रेनिल्डे अब तक भी अपनी बेटी के कामों में दिलचस्पी रखती थीं और ऐसी चर्चाओं में जुड़ने में उन्हें भी मज़ा आता था।

आन्ना की मदद के कारण मारिया को अब स्कूलों में कम समय बिताना पड़ता था और वे अपने शोध को दर्ज करने, उस पर भाषण देने में अधिक समय दे पाती थीं। कई लोग जिन्होंने मारिया के भाषण सुने थे वे मारिया की पद्धति व सामग्रियों का उपयोग कर खुद अपने स्कूल खोलना चाहते थे। 1908 की पतझड़ में मारिया ने तीन और स्कूल खोले, दो रोम में और एक मिलान में। सान लॉरेन्जो में कासा के खुलने के दो वर्ष से भी कम में मोंटेसरी का नाम इटली भर में जाना जाने लगा।

1909 की गरमियों में मारिया ने वह किया जो उन्होंने एक अर्से से नहीं किया था: उन्होंने छुट्टी ली। एक धनी बैरोनैस ने उन्हें अपने सुरुचिपूर्ण विला में कुछ समय विश्राम करने का आमंत्रण दिया था। पर मारिया को जल्द ही पता चल गया ठाले बैठना उनके बस का नहीं है। इसलिए खुद को व्यस्त रखने के लिए मारिया छत पर पहाड़ों की ओर खेलने वाले स्थान पर बैठीं और लिखने लगीं।

पेज 55
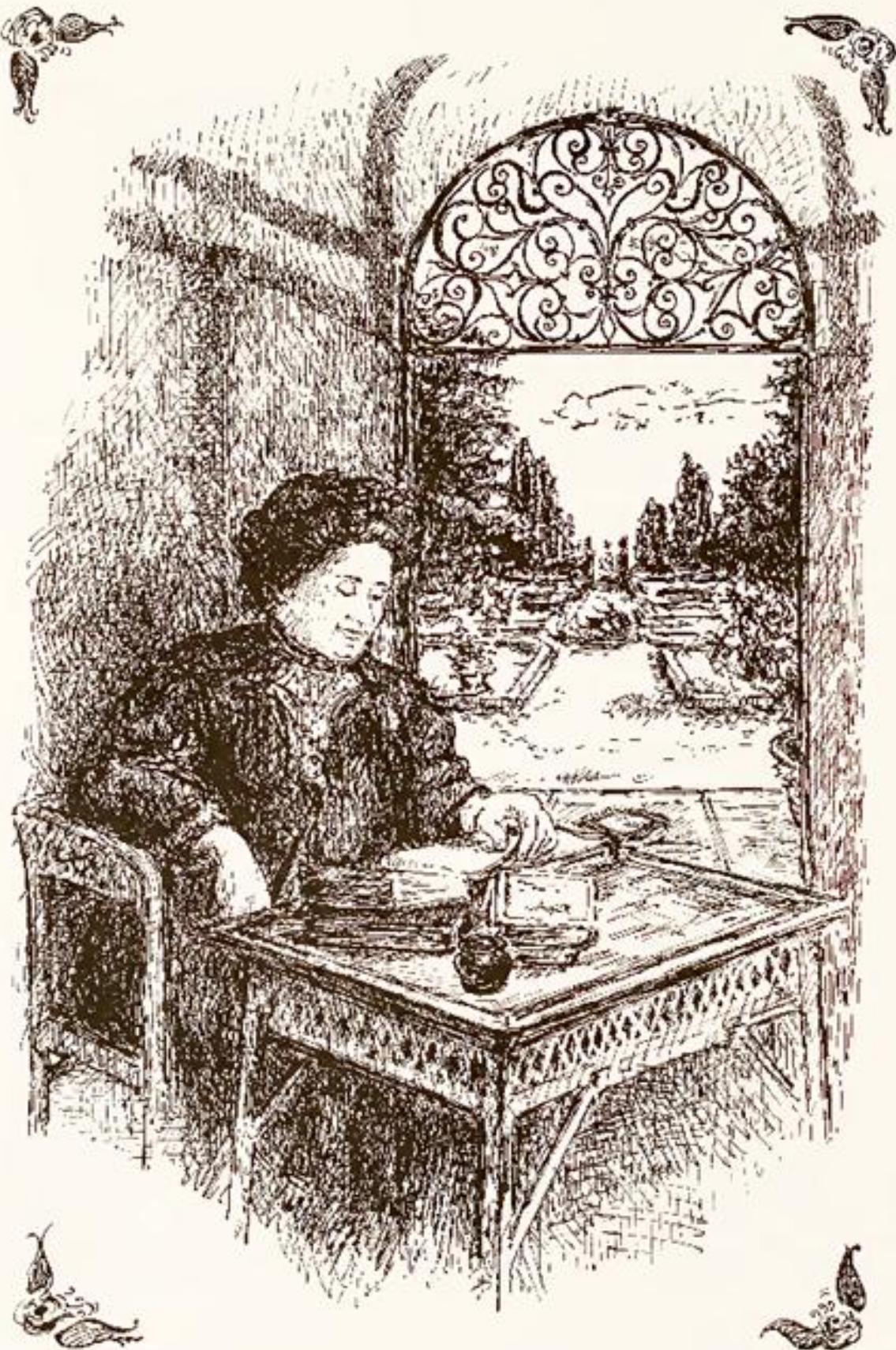
एक मतर्बे कागज़ पर अपनी कलम रखने के बाद शब्द इतनी तेज़ी से लुढ़कते निकले चले आए कि एक माह में ही उन्होंने एक किताब पूरी कर ली। *द मोंटेसरी मैथड* उसी साल छप भी गई। तीन वर्षों में ही उसका बीस से अधिक भाषाओं में अनुवाद भी हो गया। आखिरकार शिक्षण की मोंटेसरी पद्धति इटली की सरहदों के परे फैलने लगी।

अगले तीन सालों में, मोंटेसरी पद्धति पर आधारित स्कूल दुनिया भर में खुले, चीन से लेकर ऑस्ट्रेलिया व कनाडा तक में। 1911 के अंत तक इटली तथा स्वित्ज़रलैण्ड में सभी सार्वजनिक स्कूलों में मोंटेसरी पद्धति अपना ली गई। उसी साल संयुक्त राज्य अमरीका में पहली मोंटेसरी शाला टैरीटाउन, न्यू यॉर्क में खुली। दो वर्ष बाद अमरीका में करीब एक सौ मोंटेसरी स्कूल खुल गए।

मारिया इतने सारे मोंटेसरी स्कूलों को खुलते देख बेहद प्रसन्न थीं। पर उन्हें यह फिक्र भी थी कि उनकी पद्धति और सामग्रियों का शायद सही उपयोग नहीं होगा। मारिया को अहसास हुआ कि इन स्कूलों के शिक्षक-शिक्षिकाओं को विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता है। पिछले कुछ वर्षों में मारिया ने चिकित्सा का काम करने में कम ही समय बिताया था। अब चालीस वर्ष की आयु में उन्होंने तय किया कि वे अपना नाम इटली के सक्रिय चिकित्सकों की सूची से हटा देंगी। वे अपना समय शिक्षकों को प्रशिक्षित करने और नए स्कूलों के खुलने की निगहबानी करने में बिताना चाहती थीं।

पेज 56

आन्ना और अपने समर्पित हिमायतियों के एक समूह की मदद से वे अपने पहले अंतरराष्ट्रीय शिक्षक प्रशिक्षण की योजना बनाने लगीं। पर उनकी योजना में तब बाधा आई, जब 1912 की क्रिसमस के पाँच दिन पहले उनकी माँ का देहान्त हो गया। रेनिल्डे मोंटेसरी मारिया की सबसे बड़ी प्रशंसक, सहयोगी, विश्वासपात्र व सखी थीं। मारिया को उनकी कमी हमेशा खलने वाली थी। मारिया अगले कई सालों तक उनके शोक में काले वस्त्र पहनती रहीं।

पर काम में व्यस्त रहना माँ की मृत्यु के दुख को कम करने में मदद करता था। मारिया ने शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम की योजना को जारी रखा। जनवरी 1913 में रोम में इसका शुभारंभ हुआ। दुनिया के विभिन्न देशों से सत्त्यासी शिक्षकों ने इसमें शिरकत की। मारिया ने समूह से एक ऊपर उठे हुए मंच पर दुभाषिए की मदद से समूह को संबोधित किया। वे तब बयालीस साल की शालीन महिला थीं। उनके घुंघराले बाल जिनमें अब सफेदी का पुट था, उनके चिकने चेहरे और चमकदार भूरी आँखों को घेरते थे। वे धीमी गति से इतालवी में अपनी बात कहतीं, सावधानी से हर वाक्य के बाद रुकतीं, ताकि उनकी बात को अंग्रेज़ी में उल्था करने का समय मिल सके। उनकी सखियाँ कमरे के पिछले हिस्से में बैठ सगर्व अपनी माम्मोलीना को देखतीं।

यह प्रशिक्षण कार्यक्रम बेहद सफल रहा। भागीदार शिक्षक सिखाने-पढ़ाने की नई पद्धति से लैस हो अपने चुने हुए पेशे के प्रति नए उत्साह के साथ घर लौटे। मारिया भी इस बात से आश्वस्त थीं अब ये शिक्षक उनकी पद्धति का सही उपयोग कर सकेंगे। आखिरकार एक नई तरह के स्कूल का उनका सपना साकार हो रहा था।

पर मारिया की संपूर्ण खुशी की राह में एक अड़चन अब भी थी - उनके बेटे मारियो की अनुपस्थिति। उसके जन्म के बाद पंद्रह साल गुज़र चुके थे। इटली में कई चीज़ें बदली थीं - पर एक चीज़ नहीं। अविवाहित माँ का बच्चे को जन्म देना अब भी एक कलंक था।

हालांकि मारियो को मारिया की सच्चाई कभी बताई नहीं गई थी, वह हमेशा से यह जानता था कि वे बेहद खास हैं। 1913 के एक गर्म बसन्त के दिन स्कूल के भ्रमण के दौरान मारियो ने पास ही रुकी एक गाड़ी से उस ''खूबसूरत महिला'' को उतरते देखा। कई सालों बाद मारियो ने इस क्षण को याद करते हुए बताया कि वे उनके पास गए और बोले, ''मैं जानता हूँ कि आप ही मेरी माँ हैं।'' जब मारियो ने कहा कि वह उनके साथ जाना चाहता है मारिया ने इन्कार नहीं किया। उस दिन से माँ और बेटा हमेशा साथ रहे। हालांकि मारिया सार्वजनिक रूप से यह स्वीकार नहीं कर सकीं कि मारियो उनका पुत्र है, कम-से-कम अब वह उनके साथ तो था।

प्रथम अंतरराष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम की सफलता के बाद मारिया ने दुनिया भर में अनेक यात्राएं कीं, शिक्षकों को प्रशिक्षित किया, भाषण दिए और शिक्षकों को नए स्कूल खोलने में मदद की। उनकी अधिकांश

यात्राओं में मारियो उनके साथ जाता। अंततः वह उनका सचिव व सहायक बना। विवाह होने और स्वयं के बच्चे होने के बाद भी मारियो उनके साथ काम करता रहा। 1929 में उसने एसोसिएशन मोंटेसरी इन्टरनैशनल की स्थापना की ताकि मोंटेसरी शालाओं की तथा शिक्षक प्रशिक्षणों की निगहबानी की जा सके।

मारिया ने अपना शेष जीवन अपने काम को समर्पित कर दिया। पहले कासा दी बाम्बीनी के खुलने के चालीस वर्ष बाद भी मारिया अपनी शिक्षण पद्धति को उसी उत्साह व ऊर्जा के साथ सिखाती थीं। अपने अंतिम वर्षों में भी उनके लिए यह असामान्य नहीं था कि वे उड़ कर हॉलैंड से लन्दन जाएं, और दोपहर का खाना वहाँ खाने के बाद, उड़ान पकड़ भाषण देने भारत पहुँचें - एक ही दिन में! पर वे कितनी भी व्यस्त क्यों न रही हों बच्चों से मिलने का वक्त वे निकाल ही लेती थीं। किसी भी नए शहर में पहुँचते ही वे मेज़बानों से सबसे नज़दीकी मोंटेसरी शाला ले जाने का आग्रह करतीं। वहाँ वे धीरज से बैठतीं, उत्तेजित बच्चे उनके गिर्द जमा हो जाते:

‘‘यह देखिए!’’

‘‘मुझे देखिए!’’

‘‘मैं गिन सकती हूँ!’’

‘‘मेरी बात सुनिए!’’

नन्हे बच्चे हमेशा मारिया को वह सब दिखाने को आतुर रहते जो वे कर सकते थे - और मारिया भी देखने को हमेशा आतुर रहतीं।

पेज 60

1949 तक मारिया दो विश्व युद्धों को जी चुकी थीं, और अक्सर स्थाई विश्व शांति की उम्मीद की बात करती थीं। ''हम विश्व में मेल-मिलाप केवल उन वयस्कों को एकजुट कर हासिल नहीं कर सकते जो इतने अलग-थलग हों,'' मारिया कहतीं, ''यह तब हासिल किया जा सकेगा जब हम अपनी शुरुआत बच्चे से करें जो नस्लवादी पूर्वाग्रह के साथ जन्म नहीं लेता।'' बच्चों की शिक्षा के प्रति आजीवन समर्पण के लिए मारिया को 1949, 1950 व 1951 में नोबेल शांति पुरस्कार के लिए नामित किया गया। वे इस सम्मान से बेहद भावविभोर हुईं।

6 मई, 1952 को मारिया का हॉलैंड में देहान्त हुआ, जहाँ वे अपने मित्रों से मिलने गई थीं। उन्हें हॉलैंड में ही दफनाया गया। मारिया की इच्छा थी कि उन्हें वहीं दफनाया जाए जहाँ उनकी मृत्यु हो। इटली में उनके माता-पिता की कब्र पर लगे पत्थर पर यह इबारत लिखी हुई है: मारिया मोंटेसरी ''अपने प्रिय देश से, और यहाँ दफन अपने प्रियजनों से बहुत दूर चिर-विश्राम में हैं, यह इस तथ्य का सबूत है कि उनके कार्य की सार्वभौमिकता ने उन्हें विश्व नागरिक का दर्जा दिया है।''

अपनी वसीयत में मारिया ने अपनी सारी सम्पत्ति ''इल मिओ फिग्लिओ'' - ''मेरे पुत्र'' के नाम छोड़ी। आखिरकार अपनी मृत्यु के बाद वे मारियो को अपना बेटा कह सकीं। उनके अनुरोध पर मारियो ने उनके द्वारा आरंभ किए गए कार्य को ''मानवता की भलाई के लिए'' जारी रखा।

पेज 61

मारिया के विचार उनके साथ नहीं मरे। सभी स्थानों के स्कूल किसी न किसी तरह उनके कार्य से प्रभावित हुए हैं। दुनिया भर में स्थापित हज़ारों मोंटेसरी स्कूल उस महिला के प्रति श्रद्धांजलि हैं जिन्होंने एक सपना देखा - और उसे वे साकार कर सकीं।

कासा दी बाम्बीनी का एक ठेठ दिन

9:00-10:00 आगमन और दिन की तैयारी: साफ-सफाई की जाँच, एप्रेन पहनने में मदद, व्यावहारिक जीवन के अभ्यास। पिछले दिन की घटनाओं पर चर्चा। धार्मिक अभ्यास।

10:00-11:00 बौद्धिक अभ्यास (संवेदी सामग्रियों के साथ काम करना) और नाम का पाठ (वस्तुओं का वर्णन करने के लिए सही शब्द सीखना, जैसे ''लम्बा'' और ''छोटा'', ''मोटा'' और ''पतला), दोनों गतिविधियों के बीच कुछ समय विश्राम।

11:00-11:30 आसान व्यायामः सुगढ़ तरीके से अंग संचालन, सीधी कतार में मार्च करना, शिष्टाचार के पाठ, वस्तुओं को ढ़ंग से रखना।

11:30-12:00 छोटी प्रार्थना, दोपहर का भोजन।

12:00-1:00 मुक्त खेल।

1:00-2:00 निर्देशित खेल, संभव हो तो बाहर खुले में। बड़े बच्चों के लिए व्यावहारिक जीवन के अभ्यास। सभी बच्चों की साफ-सफाई की जाँच। चर्चा।

2:00-3:00 हस्त कार्य, मिट्टी से चीज़ें गढ़ना, डिज़ाइन बनाना आदि।

3:00-4:00 व्यायाम व गीत, संभव हो तो बाहर खुले में। सोच कर काम करने की क्षमता विकसित करने का अभ्यास। पौधों और पशुओं की देखभाल।

पुस्तक सूची

क्रेमर, रीटा, *मोंटेसरी : अ बायोग्राफी*, रीडिंग, मैसाच्युसैटस्ः एडिसन-वैसली, 1988

मोंटेसरी मारिया, *द मोंटेसरी मैथड*, न्यू यॉर्क, शॉकन, 1964

पोलार्ड, माइकल, *मारिया मोंटेसरी*, हैरिसबर्ग, पैन्सिलवेनिया, मोरहाउस, 1990

स्टैन्डिंग, ई. एम., *मारिया मोंटेसरीः हर लाइफ एण्ड वर्कस्*, न्यू यॉर्क, न्यू अमेरिकन लाइब्रेरी, 1957

वुल्फ, एलाइन डी.ए., *अ पेरेन्टस् गाइड टू द मोंटेसरी क्लासरूम*, एल्टूना, पैन्सिलवेनिया, परेन्ट-चाइल्ड प्रेस, 1980
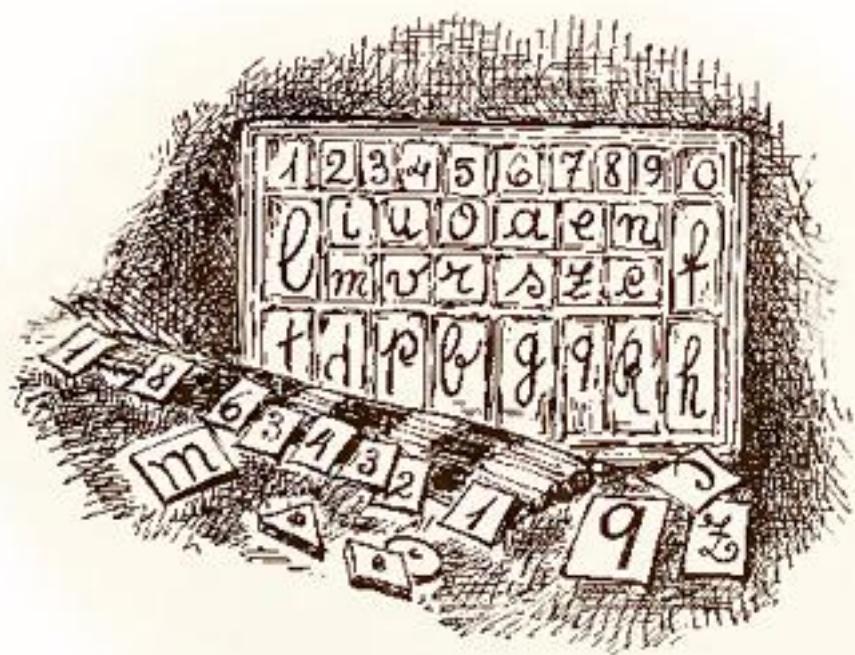
लेखिका बारबरा ओ'कॉनर की रुचि मारिया मोंटेसरी में तब जागी जब उन्होंने अपने बेटे का दाखिला डक्सबैरी, मैसाच्युसैटस् में, अपने घर के पास स्थित मोंटेसरी शाला में करवाया। जब वे डॉ. मोंटेसरी के बारे में पढ़ने लगीं, उन्होंने पाया कि ऐसी सामग्री की कमी है जिसे छोटे बच्चे व किशोर पढ़ सकें। उन्होंने तय किया कि वे युवा पाठकों के लिए मारिया मोंटेसरी की जीवनी लिखेंगी। यह सुश्री ओ'कॉनर की पहली किताब है।

सारा काम्पिटैली मोंटेसरी पद्धति नावाकिफ नहीं हैं। इटली में पलते-बढ़ते वक्त उनकी आरंभिक शिक्षा सार्वजनिक स्कूलों में हुई, जो मोंटेसरी पद्धति पर आधारित थे। उनके स्वयं के माता-पिता मोंटेसरी विधि में प्रशिक्षित थे और उन्हें मारियो मोंटेसरी से मिलने का सौभग्य मिला था। सुश्री काम्पिटैली ने फ्लॉरेन्स के एकैडेमिया दि बैले आर्टी तथा कॉर्नेल विश्वविद्यालय में अध्ययन किया। वे मिनियापोलिस, मिनैसोटा में रेखाचित्रण और इतालवी भाषा पढ़ाती हैं।